RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-11
November -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

विवेचित लेखिकाओं के उपन्यासों में बिम्ब एवं प्रतीक विधान एक अध्ययन

गिरजेश कुमार

शोधार्थी हिन्दी विभाग राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय किशनगढ़, अजमेर (राज.)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Nov 2019

Keywords
संश्लिष्ट, मूर्तभावना, संप्रेषणीयता, प्रभाता, ऐन्द्रिय, सव्य, रूपगत, प्रतिकृति, भावावेश

ABSTRACT

हिन्दी समीक्षा में 'बिम्ब शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'भाव और मनोविकार' शीर्षक निबन्ध में किया। शुक्ल के अनुसार 'बिम्ब योजना विभाव के अन्तर्गत होती है, चित्रण उसका मूल धर्म है। इसकी दूसरी विशेषता है संश्लिष्ट रूपविधान। बिम्ब व्यक्ति या विशेष का होगा, सामान्य या जाति का नहीं। काव्य का काम कल्पना में (बिम्ब) (इमेज) या मूर्तभावना उपस्थित करना है, बुद्धि के सामने कोई विचार (कांसेप्ट) लाना नहीं। आलोचक अमरनाथ इस सन्दर्भ में लिखतें हैं कि बिम्ब का पुण्य कार्य संप्रेषणीयता है। वह कलाकार की अनुभूति और प्रभाता के बीच संबंध स्थापित करने वाला सूत्र है। वह विषय को स्पष्ट करता है, दृश्य भाव या व्यापार को समृद्ध करता है। कवि की अनुभूति को तीव्र बनाता है और पाठक में ऐसी संवेदना पैदा करता है जिसकी उपलब्धि नित्यप्रति के जीवन में नहीं होती। उपन्यास जैसी विधा में ऐन्द्रिय बिम्बों का प्रयोग होता है। दृश्य, सव्य, स्पृश्य, शोध एवं रूपगत बिम्बन ऐन्द्रिक बिम्बों के अन्तर्गत आते हैं।

बिम्ब अंग्रेजी के Image शब्द का हिंदी रूपान्तरण है। उसका अर्थ है किसी पदार्थ को चित्रबद्ध करना, मूर्त रूप प्रदान करना, मानसिक प्रतिकृति उतारना आदि। बिम्ब को चित्रभाषा भी कहा जाता है। पाश्चात्य विद्वान कालरिज ने इसे शब्दों में बुना चित्र माना है जो कवि के तीव्र भावावेश को पाठक तक सम्प्रेषित करता है। इस संदर्भ में सी.ही.लेवरिन लिखते हैं Image is a picture mache of word अर्थात बिम्ब शब्दों से निर्मित आकृति है।[1] डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है कि ''काव्य बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानस छवि है जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती है।[2]

श्रव्यगत बिम्ब

श्रव्यगत बिम्ब का प्रयोग कणेन्द्रिय के द्वारा होता है। वर्ण ध्वमी, तुक छंद लय आदि शव्य बिम्ब के अन्तर्गत आते हैं। यह गहन अनुभूति रचना में शब्दों के माध्यम से आती है। जैसे– श्रव्यगत बिम्ब – नदी उपन्यास में 'दरवाजा' बिना चर्र–चूँ किए खुल गया।[3] इस प्रकार हम चर्र–चूं शब्दों के माध्यम से कह सकते हैं कि इसमें श्रव्यगत बिम्ब दिखाई देता है।

पंचकन्या उपन्यास में मनीषा कुलश्रेष्ठ ने श्रव्यगत बिम्ब को चित्रित किया है। जो निम्न उदाहरणों में देखा जा सकता है। ''एक शाम आरती के समय साढ़े सात बजे वे दोनों चित्र से उठे। मंदिर में पहुंचे तो आरती की शुरूआत ही से नगाड़ावादक भयानक ट्रांस में था, नगाड़ा गूंज रहा था। पुजारी के मन्द्र स्वरों में शामिल थे कई सारे भक्तों के स्वर, डंका, घंटा, धुआं, भभूत, कपूर। वह उसे मंदिर के गर्भगृह में ले गया, उसके सामने ही आरती की सौ बत्तियों वाली लौ को फिराता रहा और उसकी आंख से आंसू बहते रहे। ठीक देवी के सामने खड़ी माया के मस्तिष्क में धुए[4]

सुशीला टाकभौरे के प्रसिद्ध उपन्यास नीला आकाश में श्रव्यगत बिम्ब के कुछ दृश्य इंस प्रकार है। जैसे–''सुबह का समय। सूर्योदय के पहले की लालिमा सब तरफ फैली है। मुर्गे बांग दे रहे हैं। मुर्गिया कुटकुटा रही है। बकरियां खंटे से बंधी अपने गले की रस्सी छुड़ाने का प्रयत्न करती हुई, पुकार रही है। ''म्या.....ह, म्या.....ह।'' बाल्मीकि मोहल्ले की दिनचर्या सूरज निकलने के पहले ही शुरू हो जाती है। वे अपने हाथों में लम्बी झाड़ू और कचरा उठाने के लिए टोकने लेकर गांव के गली, मोहल्ले और मैदान, चौबारों की सफाई के लिए घर से निकल जाते हैं। बुधिया और कालीचरण की नौकरी के काम में, आजकल मदन और किसन मिलकर मदद कर देते हैं। जिससे बुधिया को आराम मिलने लगा है। सब काम शांति से करके, सुबह के 7–8 बजे तक वे घर लौट आते हैं। वे सवर्ण बस्ती के शौचालयों की सफाई करने जाते हैं। दोपहर के दो बजे उन्हें हाजिरी देने मुकदम के पास जाना है। सुबह के काम के बाद दोपहर में 3–4 घंटे उनसे बेगार कराई जाती है। मुकदम जो काम बताए – नाली खोदना, गड्डे भरना, घास निकालना, गटर साफ करना–सब करना पड़ता है। शाम को काम से लौटने के बाद ही उनके घर में चहल–पहल दिखाई देती है। सप्ताह में बाजार के दिन, जब मटन मछली बनाते है, तब उनके घरों की ऊंची आवाज भीकूजी के घर तक सुनाई देती है। कभी हँसी–खुशी की बातें, कभी आपस में दो–दो हाथ की बातें।[5]

जैसे– ''भीकूजी के घर के सामने नीम, आम और जामुन के बड़े झाड़ हैं। इनकीघनी डालियों के बीच पपीहा पक्षियों का वास है। सुबह होते ही उनकी मीठी आवाजमें प्रिय के लिए गुहार सुनाई देने लगती है। "पी कहाँ... पी कहाँ। छोटी काली चिड़िया भी बड़ी मधुर आवाज में गीत गा रही है। पक्षी चहचहा रहे हैं। ऐसे समय भीकूजी को लगता है, संसार

RRIJM 2015, All Rights Reserved

के सभी सुख और सन्तोष उनके पास हैं। जीने के लिएऔर क्या चाहिए ? 'जब आए सन्तोष धन, सब धन धूलि समान' – यह बात सन्तमहात्माओं ने भीकूजी जैसे लोगों के लिए ही कही होगी, ताकि वे अपने जीवन में कुछअधिक पाने का विचार न करें। अपने अभावपूर्ण जीवन में ही सुखी और सन्तुष्ठ रहें![6]

दृश्यगत बिम्ब

दृश्य बिम्ब आकार लिए होते हैं। यह अत्यन्त स्पष्ट होता है। इन बिम्बों के काव्य में अत्यधिक देखा जाता है। वातावरण को अत्यधिक स्पष्ट, कहने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

माया को जब होश आया तो वह आश्विन के कमरे में थी, उसके माथे पर सिन्दूर पुता था। आश्विन उसके खूबसूरत मगर ट्रांस के बाद पीले पड़े चेहरे को देख रहा था। वह बहुत सुन्दर लग रही थी, गेहुंअन चेहरे पर उम्र के कोई सुराग नहीं, लाल सिन्दुर से पता ललाट और दिव्य चहेरा। काले घने बाल और नाक में छोटी सी बाली। गोग्या की बात याद आ गयी। ग्रामीणों में अफवाह थी कि चितल बाव सा, लगन करने वाले हैं, एक अनाम कुलगोत्र छोरी से।[7]

मनीषा कुलश्रेष्ठ के पंचकन्या उपन्यास में दृश्गत बिम्ब का एक उदाहरण इस प्रकार है। जैसे– ''प्रज्ञा देख रही थी कि पुष्कर मेले में कालबेलिया औरतों का हुजूम घूमता है। कब किस होटल में, तम्बू में, गेस्ट हाउस में से शो करने का बुलावा आ जाए। दिन–रात रेगिस्तान में सांप पकड़ने वाले संपेरों की यह घुमन्तू प्रजाति पशु मेले में अपनी प्रतिभा, अपना सौन्दर्य भुनाने आ जाती है। सौन्दर्य भुनाना, किन्हीं सस्ते, गलीज अर्थों में कतई नहीं है। विदेशी पर्यटक रेगिस्तान की इन भुनवमोहिनियों के चित्र उतारते है। तभी तो एक सुनसान गली में सुरेश की पत्नी एक कैमरा थामे अमेरीकी सैलानी के बिल्कुल सामने जा खड़ी हुई है। 'माय नेम 'चीनो फ्रॉम व्हेयर आर यू कमींग?[8]

गंधगत बिम्ब

गंधगत बिम्ब सुगंध से सम्बन्धित होता है। मृदुला सिन्हा के उपन्यास ''परितप्त लंकेश्वरी'' में मन्दोदरी के श्रृंगार के वक्त सुंगधित इत्रों का प्रयोग होता है। जो इस उपन्यास में निम्न पंक्तियों के माध्यम से दिखाई जा सकता है। जैसे– ''मेरे पांव रूक गए। हमने उनके बारे में यह भी सुन रखा था कि वे सुदंर युवतियों का हरण कर लेते हैं। मैं सहम गई। वे बोले, ''मैं आपके साथ कोई जबरदस्ती नहीं करूँगा। आप चाहें तो बाहर के अपूर्व दृश्य देख सकती है, हम चार–चार श्रवणरंध्र एक करके इनकी गुनगुनाहट सुन सकते हैं, अपनी नासिकाएं एकाकार कर हम इनकी मनमोहक सुगंध ले सकते हैं। हमारी उँगलियां इनका ही स्पर्श कर कोमलता की अनुभूति ले सकती है। इनमें रूप, गंध, स्वर और स्पर्श को मिलाकर इनका एक विशेष स्वाद होता है। हम साथ–साथ इनके स्वाद ग्रहण कर सकते हैं।[9]

रूपगत बिम्ब

मृदुला सिन्हा के उपन्यास ''परितप्त लंकेश्वरी में रूपगत बिम्ब के कुछ उदाहरण इंस प्रकार है। जैसे–मैं उनके साथ दूसरे कमरे में चली गई। चार सेविकाओं ने मेरी मालिश प्रारंभकी। एक मेरे लंबे लंबे बालों को सँवारने लगी मेरे पाँव की एड़ियों तक लटकते मेरेघने और घूँघराले बाल किसी एक से सँभलते भी तो नहीं थे। मेरे पिताजी दोनों भाइयोंके सहयोग से सँवारा करते थे। वे मेरे शरीर पर लेप लगा रही थीं और मैं उनसे कुछ–कुछ पुछती जाती थी। मेंरे अधिकांश प्रश्न दसग्रीव के परिवार से संबंधित होते थे। पर वेसमझ जाती थीं कि मैं दसग्रीव के बारे में ही सुनना चाहती थी। वे उनके बारे में सुनातीथीं। यूँ तो विवाह के पूर्ण होने में एक–एक दिन पल की गणना मैं करती रहती थी। वे भी यही करतीं। वे मुझे सुनाया करती थीं कि विवाह में कौन–कौन अतिथि आ रहे हैं।

सांख्या ने कहा, '"धनपति कुबेर को भी निमंत्रण गया है। महात्मा विश्रवा तो आएँगे ही।[10]

''चांपा की तेज तुर्श गंध में रात की हल्की गर्म हवा नहाई हुई थी। कौशल ने हल्की चांदनी में उसे देखा था। उसकी वे हर पल सिसकती हुई सी आंखे इस समय बुझकर दो गहरी काली शांत झील में तब्दील हो चुकी थी। अब वहां सपनों के उजले राजहंस थे, इच्छाओं के नीले, ताजे कम थे और था आकाश में चमकते हुए चांद का टूटता–जुड़ता प्रतिबिंब कैसा मायावी था सब कुछ, एकदम अशरीरी, देहातीत, यथार्थ से परे।''[11]

स्पर्श बिम्ब

उषा प्रियम्वदा के नदी उपन्यास में अस्पर्शत बिम्ब के कुछ उदाहरण इस प्रकार है। जैसे – गंगा का दिमाग ठप्प है – काम करना बन्द कर चुका है क्या इसी नृशंस दयाहीन व्यक्ति के साथ जिन्दगी बितानी पड़ेगी। क्या इन बेटियों के लिए अपने को मिटा देना पड़ेगा? इसका उत्तर तो समय ही देगा। वह सपना के गाल को चूम लेती है।[12]

तभी हल्की बूंदा–बांदी कुछ तेज सी महसूस होने लगी थी। लगातार पड़ती बूंदे मुझे भिगोने लगीं थी, और उन बूंदों की सिहरन में मृदुल से जुड़े हुए विचारों की श्रृंखला के तार छिन्न–भिन्न हो गए थे।[13]

प्रतीक विधान

21वीं सदी के हिन्दी महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में प्रतीकात्मकता का नवीन एवं मौलिक स्वरूप देखने को मिलता है। वैसे हर लेखक एवं लेखिकाओं की अपनी शैली होती है। अपनी सोच–समझ होती है तभी अपने को भीड़ से अलग कर पाता है। कई ऐसी महिला लेखिकाएं है जो उपन्यासों में भी गद्यात्मक, पद्यात्मक, गीतात्मक प्रतीकों का प्रयोग कर रही है। प्रतीक ऐसे शब्द चिहन होते हैं जो अन्य वस्तु का बोध कराते है। प्रतीक संप्रेषण को गति एवं सजीवता प्रदान करते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने निबन्ध संग्रह

'चितांमणि' प्रतीक के संदर्भ में बहुत ही सटीक एवं सरलतम शब्दों में प्रस्तुत किया है – ''किसी देवता का प्रतीक सामने आने पर जिस प्रकार उसके स्वरूप और उसकी विभूति की भावना मन में आती है जैसे –'कमल' माधुर्यपूर्ण कोमल सौन्दर्य की भावना जागृत करता है, 'कुमुदिनी' शुभ हास की, चंद्र मृदुल आभा की, समुद्र प्राचुर्य विस्तार और गंभीरता की, 'आकाश' सूक्ष्मता और अनंत्मा की भावना को जागृत करता है। इसी प्रकार सर्प से क्रूरता और कुटिलता का 'अग्नि' से तेज और क्रोध का, 'वाणी' से वाणी या विघा का, 'चातक' से निःस्वार्थ प्रेम का संकेत मिलता है। संक्षेप में कहा जाए तो 'प्रतीक मनोजगत की ऐसी सृष्टि है। जिसके द्वारा अंतर्जगत का व्यावहारिक अध्ययन अधिक प्रामाणिकता के साथ किया जा सकता है। आदृश्य, अस्पर्श की अभिव्यक्ति प्रायः प्रतीक के माध्यम से की जा सकती है।[14]

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार – ''प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य अथवा गोचर वस्तु के लिए किया जाता है जो किसी अदृश्य (अगोचर या अप्रस्तुत) विषय का प्रतिविधान उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है। यह कहा जा सकता है कि किसी अन्य स्तर की समानुरूप वस्तु द्वारा किसी अन्य स्तर के विषय की प्रतिनिधित्व कने वाली वस्तु प्रतीक है।[15]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रतीक अपने अभिधा अर्थ में न होकर लक्षणा या व्यंजना में व्यक्त होता है। उसके विशिष्ट अर्थ होते हैं। मनुष्य अभिव्यक्ति के लिए प्रतीकों का प्रयोग करता है, कई प्रतीक जनमानस में विभिन्न स्थितियों, परिस्थितियों में समयानुकूल अनायास ही बनते बिगड़ते हैं, विशिष्ट अर्थ ग्रहण करते हैं। नये–नये विभिन्न तकनीकों के अविष्कार के फलस्वरूप कई नवीन प्रतीकों के प्रयोग का बढ़ना जैस–मोबाइल, कम्प्यूटर, मेल आदि। समय के साथ परंपरागत प्रतीक एवं नवीन प्रतीक आज के लेखन में लेखिकाओं ने खूब प्रयोग किया हैं। उपर्युक्त पंक्तियों में लेखिका ने प्रतीक विधान शैली का प्रयोग किया है। जिसमें इन्होंने ई–मेल की पंक्ति की तुलना दाँत में फंसे रेशे से की है।

आज ही दोपहर में मिली प्रशांत की ई–मेल की एक लाइन उसके मन में ऐसे अटक गयी जैसे दांत में कोई रेशा।[16]

आज अचानक मुर्दो के टीले में से सिन्धु धाटी की सभ्यता की तरह बाहर निकल आया है। एक कस्बेनुमा शहर जिसे वह अपना प्रस्थान बिन्दु या परतों में दबा अतीत कह सकती थी। एक ही तो शहर था कि जिसकी गली–गली जानी हुई थी। ले देकर एक वही शहर जहां जन्मी, खेली–पली और जहां से विस्थापित हुई। फिर एक बार जो निकली तो केवल मां के दाह–संस्कार के समय लौटी और फिर वह शहर अतीत में गहरे धंस गया था। आज अचानक उसे मरवाह की मंजरियों की खुशबू क्यों आने लगी है। और फॉक्स कॉम्ब फूलों का गाढ़ा गुलाबी रंग उंगलियों पर चिपक गया है।[17]

हाँ गहरे सागर की तरह नीली, प्रखर मगर करूणापूप्र और ज बवह मुझे छूते थे।[18]

वे दोनों किले के टूटे परकोटे के पिछले हिस्से में घाटी की तरफ मुंह किए बैठे थे।' सूर्यास्त ने एक बड़े चित्रकार की तरह पहले आकाश में अलग–अलगटेक्स्चर के रंग छितरा दिए थे, फिर उन्हें धीरे–धीरे मिक्स करके कोई रूप देरहा था। दूर एक गांव अंधेरे के ब्लैक–होल में घुसता जा रहा था। उनके पीछेसड़क के पार लंगूरों का एक झुंड था जो दिन भर की थकान और खीझ सेभरा था। सीताफलों के पेड़, बन्दरबाटी के पेड़ और चटूटानें किकियाहटों और खौंखियाने की आवाजों से भर गये थे। वह डरी हल्का–सा और उसने उसका छोटा हाथ अपने हाथ में ले लिया।[19]

नाचत यगावत गोपाल लाल सखिन संग इत्त हरे भरे
वा नटवर की बाकुरिया परे चेतन हूं जड़ भए
त्राम तत तत थेई तत तत थेई त्राम तत तत थेई...
तत तत थेई त्राम तत तत थेई तत तत थेई[20]
'भेडिये के समान काटि वाले
शत्रु का दमन करने वाले भीम ने
अपना चेहरा अपनी पत्नी के
कोमल मगर फटे डुए हाथों से ढक लिया
और उसके अत बह निकले।'[21]

किसी स्त्री ने किष्किंधा कांड सुनते हुए पिता से पूछा, ''तारा के लिए कहते हैं कि वह अमृत मन्थन से निकली, समुद्र मन्थन में निकली थी, फिर वानर से विवाह?[22]

वह कालिदास की शकुन्तला जैसी कोमल लतिका नहीं है जिसे एक वृक्ष का.सहारा चाहिए–पर इस समय जब उसकी आँखें रोते–रोते शुष्क हो गई थी जबउसका दिल टुकड़े–टुकड़े हो गया था, जब उसके पैरों में खड़े होने की शक्तिनहीं बची थी, तब उसे डॉ. सिन्हा, अपने पति की जरूरत थी कि उनके कन्धेपर सिर रखकर कुछ हिम्मत बँधे कि बिना भविष्य के जीवन काट सके, पर हुआ क्या, सहारे की जगह भर्त्सना, शिकायतें, उलटे–सीधे इल्जाम–उसे लगा कि डॉ. सिन्हा स्वयं विक्षिप्त हो गए हैं, उसने जब उन्हें सहारा दिया तब डॉसिन्हा ने उसे अपने से दूर करते हुए ऐसे धक्का दिया कि वह लड़खड़ा गई,[23]

उस दिन कॉटेज से निकलकर बाहर का गेट बंद करते हुए खिड़की के घिशेहुए कांच में से उसे दो आंखें दिखी थीं–बुझे हुए दीये की तरह–निष्प्रभ जोधुआंई हुई–सी। वह कुछ क्षणों के लिए ठिठकी रह गई थी। वे आंखें भी वहीं ठहर गई थीं। उसे लगा था, कहीं कोई शीशा चटका है, कुछ अनकहे शब्द हवा के परों पर तैरते हुए आए थे और उसमें अनाम गंध की तरह उतर गए थे। एकसंक्षिप्त–से क्षण में उसे महसूस हुआ था, उसके अंदर की वर्षों से ऊसर पड़ी जमीन पर कोई फूल खिल गया है।[24]

RRIJM 2015, All Rights Reserved

वह एक ही क्षण में मानिनी से आकर्षित और विकर्षित महसूस करती थी, मगर वह दुर्निवार मोह उसे उससे दूर भी जाने नहीं देता था किसी तरह। वह एक कदम बढ़ाती थी तो दो कदम पीछे लौट आती थी उसकी तरफ। उन आंखों का नीरव सम्मोहन ही कुछ ऐसा था, जंजीर बन जाता था हाथ पांव की।[25]

गुलाब जिस्म का यों ही नहीं खिला होगा
हवा ने पहले तुझे फिर मुझे छुआ होगा।[26]
गणित से नापा तो
जीवन दरिद्र लगा
कविता से नापा
तो जीवन समुद्र लगा
गणित बार–बार दोहराता रहा
कितना जुड़ा?
कविता ने बार बार यही पूछा
कितना घटा?[27]

समझ रहे हो प्रेम करने वालों की दशा। गुडनाइट। तुम्हारे समय के अनुसार गुडमार्निंग। मेरे इतने लंबे ई–मेल का इतना छोटा जवाब। नहीं चलेगा। समझे। प्यार। अ टाइट हग्ग एंड अ लॉग किस।

तुम भविष्य की सीढ़ियां चढ़ रहे हो। मैं अंधेरे अतीत में उतर रही हूं। क्योंकोई तिलिस्म–सा है। मंत्रमुग्ध–सी बढ़ रही हूं, बढ़ती जा रही हूं।[28]

चन्दरी कहती – "अरी बहन, बेटियों, अपने घर से निकलो, समाज से जुड़ो और समाज को जोड़ो।" बुधिया कहती – "सिंगार पटार में बहुत समय गंवा दिया तुमने, अपने मर्दों की लाड़ प्यार की बातें भी खूब सुन लीं, बाल बच्चों को भी पाल पोस के बड़ा कर दिया। अब आईना देखने के बदले समाज के काम से निकलो। खुद को आईने में देखने के बदले अपने आप को बदलो।"[29]

ऊंह यह शब्द ही पसंद नहीं मुझे। मेरे हिसाब से हमारे यहां फेमिनिज्म भी एक किस्म का मर्दवाद ही है, फीमेल स्किन में। हम 'ब्रा' जलाएं कि खड़े होकर धार मारें। मर्द को डिस्कार्ड करके खुद ही मर्द बन जाएं। मेल शॉविनिज्म को फेमिनिस्ट्स कंउम नहीं करती बल्कि खुद उसे अलग तरह से प्रेक्टिस करती है। मैं इक्वलिस्ट हूँ, पंचकन्याओं की तरह। अपनी देह में खुश, उत्सवरत। अपने अस्तित्व में आजाद, पुरूष के बराबर। एग्नेस इस भारतीय लड़की को देखती रह गयी।[30]

निष्कर्ष –

इस प्रकार हम भाषिक संरचना के सन्दर्भ में देखते हैं कि 21वीं सदी की हिन्दी महिला उपन्यास लेखिकाओं के लेखन की भाषिक संरचना रही है। जो कि अवलोकन की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। शोधार्थी द्वारा स्त्री लेखिकाओं के द्वारा प्रयोग की गई भाषा, बिम्ब, प्रतीक विधान एवं अभिव्यक्ति शैली को लेखिकाओं द्वारा लिखित उपन्यासों के माध्यम से स्पष्ट करने का सूक्ष्म प्रयास किया है। विवेचित उपन्यासों के अवलोकन के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में सरल, स्पष्ट, प्रतीकात्मक, व्यंगात्मक, काव्यात्मक जैसी महत्वपूर्ण शैली का प्रयोग किया है। तथा अपने उपन्यासों में अंग्रेजी शब्दावली, संस्कृत शब्दावली व मुहावरों का प्रयोग चित्रण को स्पष्ट करने के लिए बड़े ही प्रभावशाली ढंग से किया है।

संदर्भ सूची

1. अमरनाथ : हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ.सं. 247
2. वही, पृ.सं. 247
3. उषा प्रियम्वदा : नदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 10
4. मनीषा कुलश्रेष्ठ : पंचकन्या, सामयिक प्रकाशन, पृ.सं. 81
5. सुशीला टाकभौरे : नीला आकाश, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर, पृ.सं. 27
6. सुशीला टाकभौरे : नीला आकाश, पृ.सं. 29
7. मनीषा कुलश्रेष्ठ : पंचकन्या, पृ.सं. 82
8. मनीषा कुलश्रेष्ठ : पंचकन्या, पृ.सं. 126
9. मृदुला सिन्हा : परितप्त लंकेश्वरी, पृ.सं. 39
10. मृदुला सिन्हा : परितप्त लंकेश्वरी, पृ.सं. 43
11. जयश्री रॉय : साथ चलते हुए, पृ.सं. 69
12. उषा प्रियम्वदा : नदी, पृ.सं. 78
13. शरद सिंह : कस्बाई सिमोन, पृ.सं. 21
14. अमरनाथ : हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ.सं. 228
15. वही, पृ.सं. 228
16. मनीषा कुलश्रेष्ठ : पंचकन्या, पृ.सं. 12
17. मनीषा कुलश्रेष्ठ : पृ.सं. 21
18. उषा प्रियम्वदा : नदी, पृ.सं. 139
19. मनीषा कुलश्रेष्ठ : पंचकन्या, पृ.सं. 21
20. मनीषा कुलश्रेष्ठ : पंचकन्या, पृ.सं. 55
21. मनीषा कुलश्रेष्ठ : पंचकन्या, पृ.सं. 223
22. मनीषा कुलश्रेष्ठ : पंचकन्या, पृ.सं. 284
23. उषा प्रियम्वदा : नदी, पृ.सं. 66
24. जयश्री रॉय : साथ चलते हुए, पृ.सं. 58
25. जयश्री रॉय : साथ चलते हुए, पृ.सं. 72
26. मैत्रेयी पुष्पा : फरिश्ते निकले, पृ.सं. 175
27. कमल कुमार : पासवर्ड, पृ.सं. 56
28. कमल कुमार : पासवर्ड, पृ.सं. 191
29. सुशीला टाकभौरे : नीला आकाश, पृ.सं. 98
30. मनीषा कुलश्रेष्ठ : पंचकन्या, पृ.सं. 107

RRIJM 2015, All Rights Reserved